बदलते जिस्म की रूह

टप….. टप ….टप की बरसती आवाज़ पर दोनों छोटे बच्चों की नज़र ऊपर टूटे हुए छत की ओर उठती है।

“ अरे यह तो छत से पानी टपक रहा है” छोटा लड़का सोनू अपनी हम उम्र बहन रानी से फुसफुसाकर कहता है ।

“ रानी मैं बाहर आँगन से बाल्टी लाकर टूटे छत के नीचे रखता हूँ “

“पर भाई बाहर तो ज़ोरों की बारिश और तूफ़ान है।तुम भीग जाओगे “ रानी ने चिन्तित होकर कहा

“ पर अगर कमरे में पानी भर गया तो हमारी खैर नहीं । वो उठ कर हमें पीटेंगी ।तू डर मत मैं कर लूँगा ।”दोनों आशंकित नज़रों से सामने पड़े बिस्तर की तरफ़ देखते हैं जहां एक औरत सोयी हुई है।उस औरत के अत्याचारों को सहते सहते इस छोटी सी उम्र में ये छोटे बच्चे बहुत कुछ सीख गये थे। सोनू दौड़ कर बाहर से बाल्टी लाकर टपकती छत के नीचे रख देता है।

टूटे - फूटे घर के ख़स्ताहाल कमरे के कोने में डरे ,सहमे दो दिन से भूखे छ: साल के ये जुड़वे भाई बहन एक दूसरे का हाथ थामे खड़े हैं।सहसा ज़ोर से बिजली कड़कती है।बच्ची डर कर रोने को होती है।

“श..श…श चुप ,आवाज़ नहीं वरना वो जाग जायेगी “ सोनू सहमी आवाज़ में कहता है

भूख से बेहाल रानी की हिम्मत जवाब दे जाती है ।वो पेट की मरोड़ को हाथ से दबा कर नीचे बैठ जाती है ।

“क्या हुआ रानी? “

“भाई बहुत भूख लगी है “

“सब्र कर मैं कुछ जुगाड़ करता हूँ “ सोनू बाहर रसोई की ओर भागता है।फिर दो सूखी रोटी लेकर दबे क़दमों से वापिस आता है।

“ले जल्दी से खा ले “

रानी का चेहरा खिल जाता है ।जैसे कोई पकवान खाने को मिल गया हो। ख़ुशी से चहक कर कहती है

“कहाँ से मिली ?”

“ मैंने छुपाकर रखी थी ।अब तू चुपचाप जल्दी से खा लें वरना अगर वो उठ गई तो रोटी तो छीन ही लेगी मार पड़ेगी सो अलग”

रानी ने नाज़ से अपने होनहार भाई को देखा और आधी रोटी एकसाथ गपक गई फिर मासूम को ख़्याल आया भाई भी तो भूखा है

“तुम भी तो भूखे हो भाई ,थोड़ी रोटी तुम भी खा लो “

छ: साल का छोटा सोनू कब तक अपनी भूख को मार पाता ।रोटी का एक टुकड़ा जैसे ही मुँह में रखता है कि उसे बिस्तर में लेटी सौतेली माँ हिलते हुए दिखती है ।ख़ौफ़ से सोनू पूरी रोटी रानी के मुँह में ठूँस देता है और उसे अपने पीछे कर लेता है ।

पर ये क्या माँ तो कुछ अजीब सा व्यवहार कर रही हैं- सोनू कुछ हैरान परेशान सा उन्हें देखता है।

उधर माया जैसे लम्बी नींद से जागी हो।

“ये मैं कहाँ आ गई हूँ ।” अपने हाथों को आश्चर्य से देखती हुई मन ही मन कहती है-

“ये तो मेरा शरीर नहीं है ।ये किसके शरीर में मेरी रूह घुस आई है ? ये क्या हो रहा है मेरे साथ ?”

उसकी नज़र पुराने से टूटे हुए छत पर पड़ती है । फिर अचानक उसे कोने में खड़े फटेहाल सहमे डरे हुए बच्चे दिखते है।वो उलझन में पड़ जाती है ।

“ ये कैसे हो सकता है ? ये ख़स्ताहाल घर मेरा घर नहीं, ये पहाड़ी कस्बाई गाँव मेरा शहर नहीं और तो और ये मेरा शरीर भी नहीं ।” फिर ज़ोर ज़ोर से सिर हिलाती है - नहीं !नहीं !नहीं ! मैं जीवित कैसे बच गई ?

वो दौड़ कर दरवाज़े तक जाती है ।अचानक उसके मुँह से निकलता है : “ अरे वो सब तो गुजर गया ! न आग की बड़ी बड़ी लपटें है ,न accident वाली मेरी गाड़ी ।” गहरी साँस लेते हुये माया को राहत सी मिलती है ।और वो सोचती है

“ थोडी देर आँखें मूँद कर समझूँ तो ज़रा ये मामला क्या है और ये ख़स्ताहाल बच्चे इतने डरे सहमे से मुझे क्यों देख रहें हैं “

फिर धड़ाम से आकर बिस्तर पर लेट जाती है।

“ कल देर रात जब मेरी आँखें खुली थी तो अंधेरे में मुझे कुछ सूझ नहीं रहा था और सिर दर्द से फटा जा रहा था और फिर मैं सो गई थी । और अब मैं किसी अंजान जगह, अंजान शरीर में आ गई हूँ ।”

फिर धीरे-धीरे पीछे छूटी ज़िन्दगी के सब scene(दृश्य) उसकी आँखों के आगे घूमने लगते हैं जैसे वो कोई पिक्चर देख रही हो ।

इधर सोनू और रानी हैरान परेशान से कभी सौतेली माँ को कभी एक दूसरे को देख रहे हैं

“भाई ये इनको क्या हुआ । ये ऐसा क्यों behave कर रहीं हैं “ डरते हुए रानी पूछती है ।

“ पता नहीं रानी कुछ तो बहुत अजीब सा है वरना अब तक तो हम पर उनका चिल्लाना, मार पीटना शुरू हो गया होता” फिर कुछ सोच कर सोनू कहता है

“ तीन दिन हो गये पिताजी को पहाड़ी पर गये । अभी तक शिकार करके नहीं लौटे “

“कहीं ये हमें घर से निकालने का प्लान तो नहीं बना रही” मासूम रानी डर कर कहती है

“ ऐसे बारिश तूफ़ान में हम कहाँ जाएँगे भाई”

“अरे नहीं रानी , वो भला ऐसा क्यों करेंगी, हम तो नौकरों की तरह इसका

सारा काम करतें हैं । “ सोनू ने उसे तसल्ली दी ।

उधर माया आँखें बंद कर पिछली ज़िंदगी का हिसाब किताब देख रही है ।

प्रताप नगर शहर के सबसे अमीर शाह परिवार की इकलौती बेटी माया जो कॉलेज के एक लफ़ंगे आवारे लड़के नीरज के प्यार में अंधी हो जाती है जिसके घर का भी कोई अता पता नहीं है ।

“यार तूने इस अमीर जादी को कैसे फँसा ली” नीरज का दोस्त साहिल रश्क खाते हुए पूछता है

“अपने जलवें ही कुछ ऐसे हैं कि एक नज़र डाली नहीं कि लड़की अपनी झोली में” नीरज शान झाड़ते हुए कहता है

“अच्छा जेब में ढेला नहीं चला लड़की पटाने” साहिल टांग खींचताहै ।

तू पटाने की बात छोड़ मैं तो जल्दी ही शादी करने वाला हूँ " नीरज सबको चौंका देता है ।नीरज निहायत चालाक और ख़ुदगर्ज़ इंसान था।

उधर माया अपनी माँ से लड़ रही है जो इस शादी के ख़िलाफ़ है ।

"माया ये लड़का तेरे लायक़ नहीं । इसके घर बार का कोई ठिकाना नहीं, जेब में पैसे नहीं ।जब देखो मुँह उठाये मम्मीजी मम्मीजी कहते चिपकता रहता है " माया की माँ नाराज़ होती हैं ।

"आपको पैसे की क्या कमी है । बेचारा गरीब हैं तो क्या इंसान नहीं है क्या ?मैं तो बस नीरज से ही शादी करूँगी । " माया ने दो टूक अपना फ़ैसला सुना दिया।

बाद में वह नीरज से कहती है

 "चलो हम कहीं और जा कर शादी करके घर बसायेंगे। मुझे पैसों की परवाह नहीं "

" नहीं बेबी तुम उनकी इकलौती संतान हो ।तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए " नीरज अपने इरादे पर पानी फेरने का रिस्क नहीं ले सकता था।

"फिर बोलो क्या करें । मैं तुम्हारे सिवा किसी और से शादी नहीं कर सकती " माया ने आवेश में आकर कहा ।

नीरज को लड़की फँसाने के अपने जादुई हुनर पर गर्व महसूस हुआ ।माया को फुसलाते हुए बोला

" माया dear चलो हम पहले तुम्हारे पिताजी से बात करते हैं ।मुझे यक़ीन है वो ज़रूर मान जाएंगे"

माया के पिता राजन शाह बहुत नरमदिल इंसान थे। बेटी उन्हें जान से भी ज़्यादा प्यारी थी उन्होंने माया को सिर चढ़ा रखा था ।इस बात का नीरज को बख़ूबी अंदाज़ा था। माया के अनाप शनाप ख़र्चे और नीरज पर बेहिसाब पैसे उड़ाने की आदत से ये बात साफ़ ज़ाहिर हो चुकी थी।दोनों राजन शाह से मिलते ।

राजन शाह वैसे तो घरेलू फ़ैसलों में ज़्यादा दखलअंदाजी नहीं करते थे परंतु बेटी की ख़ुशी के लिए वो नीरज के झाँसे में आ जाते हैं। नीरज को लोगों को फँसाने की कला बख़ूबी आती थी ।वे राजन शाह से उनके बिज़नस के बारे बड़ी बड़ी बातें कह कर उन्हें impress कर लेता है जिसकी जानकारी उसने पहले ही से जुटा रखी थी।

माया की माँ को हारकर पति की बात माननी पड़ती है।

"देखा माया dear अपने जानू का कमाल" नीरज माया की आँखों में झांकता है ।माया उसके छलावे को ही उसकी क़ाबिलियत मानकर उससे चिपक जाती है ।

शादी के बाद नीरज अपना बोरिया बिस्तर लेकर माया के यहाँ रहने आ जाता है । नीरज सोचता है

"पहली मंज़िल तो मैंने पार कर ली । अब फ़ाइनल खेल खेलना है मुझे बहुत सावधानी और चालाकी बरतनी होगी वरना बना बनाया खेल बिगड़ जायेगा ।"

इधर माया को भी नीरज के रंग ढंग बदले हुये नज़र आने लगे ।नीरज ने आते ही रईसों जैसा बर्ताव करने लगता है । माया के लिये आजकल उसके पास टाइम नहीं होता ।वे होटलों में अय्याशी करता है ।नीरज राजन शाह में जुए की बुरी लत डालना देता है और खुद उनका सारा कारोबार अपने कब्जे में ले लेता है ।राजन शाह के नाम पर ग़लत धंधे कर उन्हें जेल भिजवा देता है । माया की माँ इस ग़म से बीमार हो जाती हैं ।और एक दिन सुबह माया की हालात पर रोते-रोते हिचकियों में दम निकल जाता है ।

“ मॉ मुझे माफ़ कर दो । मैंने तुम्हारी बात नहीं मानी थी ।मेरी वजह तुम्हारी जान गई” मरे मॉ से लिपट कर वो फूट फूट कर रोती है ।

नीरज के लिये माया का ग़ुस्सा भीतर ही भीतर लावा बन खौलने लगता है ।

एकदिन जब नीरज माया पर हाथ उठाता है तो माया गुस्से में बिफर पड़ती है।

“ तुमसे शादी करके मैंने अपनी और परिवार की ज़िन्दगी नरक बना ली ।तुम निकल जाओ मेरे घर से “ माया चिल्ला कर कहती है

“ मैंने कहा था मुझसे शादी करो । तुम्हीं मेरे पीछे पड़ी थी । मैं क्यों घर से निकल जाऊँ सारा कारोबार मेरे हाथ में है ।अब मैं ही इस घर का मर्द हूँ । तुम्हारे जुआरी पापा तो हवालात की सैर पर चले गये।मेरे कंधों पर सब बोझ डाल कर “।नीरज मक्कारी से कहता है ।

माया नफ़रत क्षोभ और ग़ुस्से से भरकर वहाँ से चली जाती ।माया सोचती है कि “अब मेरे पास क्या बचा है सिवाय पश्चाताप और ग्लानि के ।मेरे जीने का कोई मतलब ही नहीं । मैंने अपने परिवार को खा लिया है । इस धूर्त कपटी अत्याचारी को सबक़ सिखाये बिना मर कर भी मेरी रूह को चैन नहीं मिलेगा ।

उस रात माया सोती नहीं है । रात के सन्नाटे में वह उठती है । उसने पेट्रोल पम्प दो बड़े कनस्तर पेट्रोल भर कर अपनी गाड़ी में छिपा रखा था ।वो पूरे घर में पेट्रोल छिड़कती हैं। नीरज के कमरे को बाहर से बन्द कर खुद बाहर आकर आग लगा देती है। मानो इतने दिनों से उसके भीतर जमा लावा ज्वालामुखी बन कर निकल रहा है । वो सोचती है” अपनी जान लेने से पहले मन्दिर मै जाती हूँ जहां माँ ज़ाया करती थी ।ईश्वर से अपने गुनाहों की माफ़ी माँग कर उनके पास चली जाऊँगी “

वो अपनी गाड़ी में बैठती है । “ पर ये क्या गाड़ी क्यों बेक़ाबू हो रही है ।अरे नहीं इस तरह नहीं …….”देखते ही देखते आग की ऊँची ऊँची लपटें माया की गाड़ी को निगल जाती है ।इस माया की लीला तो ख़त्म हो जाती है पर भगवान की लीला अभी बाक़ी है।

माया के पिछली ज़िन्दगी का रील ख़त्म होता है ।

“ईश्वर ने मुझे नई ज़िन्दगी दी है । शायद इसका भी कोई मतलब होगा “ टूटे -फूटे फटीचर से मकान और कोने में खड़े फटेहाल में सहमे डरे बच्चों की ओर दुबारा उसकी नज़र जाती है - लगता है इस कमउम्र शरीर की मालकिन इनकी सौतेली माँ होगी जो इन पर खूब अत्याचार करती होगी वरना ये इतने बुरे हाल में डरे सहमें से न होते । मुझे शायद भगवान ने इसलिए यहाँ इस शरीर में भेजा है कि मैं इन्हें अच्छें से पालकर , इस टूटे फूटे घर को सँभाल कर अपने पिछले जन्म की ग़लतियों का प्रायश्चित का सकूँ। आश्चर्य कि मुझे अपने पिछले जन्म की ही नहीं इस परिवार की जिन्हें मैं जानती तक नहीं,उनकी भी सब बातें कैसे याद है । ये सब ऊपर। वाले का करिश्मा है”

अपनी सोच पर क़ाबू पाते हुए माया बच्चों को इशारे से पास बुलाती है “ सोनू रानी यहाँ आओ “

माया खुद में ही चौंक जाती है “ मेरी आवाज़ भी बदल गई और मुझे इनका नाम कैसे पता चला ?प्रभु तेरी विचित्र माया ! “

उधर बच्चे माया की नरम आवाज़ पर भौचक्के होते हैं औरअपनी जगह से नहीं हिलते।

“ ये इसकी कोई चाल होगी हमे पास बुला कर पीटने के लिये” सोनू सोचता है और रानी का हाथ कस कर पकड़ लेता है ।

“ तुम्हारी शक्ल बता रही है तुम लोगों को भूख लगी है ।मैं कुछ बनाती हूँ । “ बिस्तर के नीचे रखे बक्से से माया दाल चावल बाक़ी ज़रूरी सामान निकालती है और बाहर रसोई की तरफ़ बढ़ती है ।रसोई का चूल्हा औंधा बूझा पड़ा है । माया जब छोटी थी तो उसकी माँ उसे स्कूल की छुट्टियों में नानी के पास उनके गाँव भेज देती थी नानी के यहाँ सारा खाना चूल्हे में बनता था और माया को नानी के साथ चूल्हे में खाना बनाने में बड़ा मज़ा आता था । माया मन ही मन सोचती है “ जीवन में कुछ भी सीखा कभी बेकार नहीं जाता । क्या कभी सपने भी ये सोचा था कि उसे ऐसी परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा ? “ माया पास रखी लकड़ियों से चूल्हा जलाती है।एक बर्तन में चावल का पानी चढ़ाती है।

“सोनू भाई चलो न देखते हैं कि माँ की रसोई में क्या कर रही है “रानी कहती है। दोनों भाई बहन रसोई के दरवाज़े पे आगे खड़े हो जाते हैं

“सोनू तुम ज़रा चूल्हे पर नज़र रखना अगर लकड़ियाँ बूझने लगे तो मुझे आवाज़ देना मैं बाहर से भी थोड़ी धनिया पत्ती तोड़कर लाती हूँ” माया कहती है ।

पहले तो सोनू अपनी जगह से नहीं हिलता फिर सौतेली माँ से मार खाने का ख्याल आते ही चूल्हे के पास आकर बैठ जाता है।

“ये आफ़त की बारिश तूफ़ान न जाने कब ख़त्म होगा “ माया जल्दी जल्दी धनिया तोड़ कर अन्दर आती है ।

थोड़ा भीग भी जाती है।

रसोई में दरवाज़ा भी नहीं था पानी की बौछारें हवा के झोंके से अन्दर तक आ रही थी ।

“रानी सोनू तुम लोग अन्दर जाकर बैठो वरना ठंड लग जाएगी मैं जल्दी खाना बनाकर लाती हूँ फिर साथ मिलकर खायेंगे “ माया प्यार से उन्हें देख कर कहती है । दोनों बच्चे माया के बिन वजह बदले व्यवहार से हैरान परेशान बिना कुछ कहे चुपचाप वहाँ से अंदर चले जाते हैं।

माया उन्हें दाल चावल परोसती है “गरम गरम खा लो वरना ठंडे खाने से मज़ा नहीं आयेगा।”

“इससे पहले की सौतेली माँ का इरादा बदल जाये चल खा लेते हैं “सोनू रानी के कान में कहता है।देखते ही देखते दोनों खाने पर टूट पड़ते हैं ।

माया मुस्कुराते हुए कहती है “ बढ़िया है न खाओ खाओ । तुम्हारे पिताजी के लिये भी रखा है । शायद आज वो शिकार से लौट आये”कहकर वो अपने लिए भी खाना निकालती है कि तभी कोई बाहर से ज़ोर ज़ोर से दरवाज़ा पीटता है

“ अरी सुमन की बच्ची दरवाज़ा खोल । दो महीने से हमारे पैसे हड़प कर बैठी है ।” बाहर से एक मोटी भद्दी सी औरत की आवाज़ आती है।बच्चे डर कर बिस्तर के नीचे छिप जाते हैं ।माया हक्की बक्की सी है कि क्या करे।